International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 18-10-2025, Accepted: 17-11-2025, Published: 01-12-2025
Volume 11, Issue 4, 2025, Page No. 114-116

कैलाश बनवासी की कहानियों में स्त्री जीवन

डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति[1], दुर्गेश कुमार टंडन[2]
[1] सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, पण्डित सुन्दर लाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ, भारत
[2] शोधार्थी, हिन्दी विभाग, पण्डित सुन्दर लाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ, भारत

सारांश
साहित्य जगत में स्त्री जीवन का चित्रण एक महत्वपूर्ण विषय रहा है, जिसमें समय के साथ स्त्री की भूमिका, संघर्ष, जिम्मेदारी और बदलते सामाजिक दृष्टिकोण स्पष्ट दिखाई देते हैं। समकालीन हिंदी कथा साहित्य में कथाकार कैलाश बनवासी ने स्त्री जीवन को अत्यंत यथार्थवादी, संवेदनशील एवं मानवीय दृष्टि से प्रस्तुत किया है। उनकी कहानियों में स्त्री केवल घरेलू दायित्वों तक सीमित न होकर सामाजिक, आर्थिक और भावनात्मक स्तर पर संघर्षरत दिखाई देती है। बनवासी की कहानियों में स्त्रियाँ पुरुष प्रधान समाज में शोषण, अपमान, आर्थिक असमानता, कार्यस्थल पर उत्पीड़न और सामाजिक बंधनों से जूझते हुए भी साहस, आत्मसम्मान, त्याग और आत्मनिर्णय की भावना के साथ उभरती हैं। उनकी कहानियों में सरला, रणवीर, जमुना, जया की माँ, शीला, गोमती, डॉली जैसी पात्राएँ समाज में स्त्री के बहुआयामी संघर्ष और अस्तित्व की जद्दोजहद को उजागर करती हैं।
कथाकार ने पारिवारिक संबंधों, कार्यस्थल के अनुभवों, दकियानूसी परंपराओं, आर्थिक निर्भरता और सामाजिक मानसिकता के माध्यम से स्त्री जीवन की विडंबनाओं का यथार्थ अंकन किया है। इसके साथ ही उनकी कहानियाँ स्त्री को केवल पीड़िता के रूप में नहीं, बल्कि संघर्षशील, निर्णय क्षमता वाली और आत्मसम्मान की रक्षा हेतु खड़ी होने वाली चेतन शक्तियों के रूप में भी प्रस्तुत करती हैं।

मूल शब्द: स्त्री जीवन, आत्मसम्मान, शोषण, यथार्थ चित्रण, संवेदनशील, पुरुष प्रधान समाज

प्रस्तावना
हिंदी कथा साहित्य में स्त्री–जीवन का चित्रण एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में रहा है। समाज में स्त्री की भूमिका व जिम्मेदारी निरंतर बदलती रही है। सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक जिम्मेदारियों को स्त्री बखूबी निभाते आयी है। समकालीन कथा साहित्य में कैलाश बनवासी युवा कहानीकार के रूप में उभरते कथाकार है। इनकी कहानियों में स्त्री जीवन का चित्रण यथार्थवादी, संघर्षशील और संवेदनशील रूप में हुआ है। समाज में स्त्री पुरुष एक गाड़ी के दो पहिए के रूप में माना जाता है, इसके बावजूद पुरुष प्रधान भारतीय समाज में स्त्री संघर्ष से जुझती नजर आती है। सामाजिक जीवन में कुशलता पूर्वक जीवन निर्वाह तथा पारिवारिक जीवन व्यतीत करने के लिए स्त्री की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बनवासी अपने कहानियों में स्त्री के जीवन संघर्ष तथा त्याग रूप का यथार्थ चित्रण किया है। पारिवारिक जीवन में स्त्री अपनी खुशी को तिलांजलि देकर अपने पति, बच्चे व परिवार की खुशियों के लिए तत्पर रहती है। इसके बाद भी इनका त्याग समाप्त नहीं होता। घर की जिम्मेदारी निभाते हुए आर्थिक स्थिति में सहयोग के लिए घर–परिवार संभालने के बाद बाहर काम करने निकल जाती है। कार्यस्थल में भी स्त्री को कई प्रकार की संघर्ष का सामना करनी पड़ती है, उसके बावजूद वह केवल लाचार, असहाय नहीं बल्कि संघर्ष कर आत्मसम्मान के साथ अपने अधिकार के लिए संघर्ष करती हुई नजर आती है। कथाकार कैलाश बनवासी की कहानियों में स्त्री जीवन का यथार्थ चित्रण स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।
पहिये कहानी में कथाकार शहरों की भाग दौड़ दुनिया जिसमें मजबूरी का फायदा उठाकर अपना स्वार्थ साधने का यथार्थ को चित्रण किया है। पीटर का बड़ी बहन सरला शारीरिक कमजोरी होने के बावजूद डॉक्टर चौधरी के नर्सिंग होम में आया का काम करती है। देर रात तक रुकना पड़ता है। घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण सरला काम करने को मजबूर रहती है। उनकी मजबूरी का फायदा उठाकर डॉक्टर चौधरी उनके साथ अनैतिक व्यवहार करते हैं। पीटर सरला से पूछता है–
"पीटर बोल्ता.... परसों तेरे कू रात हो गयी घर जाने में.....
– हो.... ग्यारा बजे ... डाक्टर मेरे कू रोक के रखा था....फिर छोड़ने गया...।
..... भीतर कुछ कसमसा गया.... जबड़े कस गए उसके.... डाक्टर !! आँखों में हिंसा परथराने लगी।
चुप रहा नागेश.... चुप रही सरला....।
– घर पे क्या बोली ? आवाज़ में लरजिश है।
– क्या बोलती ? घास का एक तिनका झटके से तोड़ दी.... देखती रही नीचे.... काम था करके रुकी मैं....!
– छोड़ कायकू नई देती ? उछल गयी बहुत भीतर की पीड़ा।
– किधर जाऊँ ?... उसकी बड़ी–बड़ी आँखें ठहर गयी हैं नागेश के चेहरे पर । हर जगे.... लोक येच काम....!"[1]
समाज के स्त्री को लोग निम्न मासिकता से देखने की यथार्थ चित्रण कथाकार ने किया है। घर के बाहर कार्य स्थल में भी उनके अस्मिता को खतरा बनी रहती है।
दोहराव कहानी आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण किस प्रकार घर में सभी सदस्यगण के जीवन संघर्ष से भर जाता है। पुरुष प्रधान भारतीय समाज में मुखिया घर परिवार चलते हैं लेकिन स्वास्थ्यगत समस्या के कारण आर्थिक स्थिति कमजोर हो जाती है, तो स्त्री परिवार की बागडोर थाम लेती है। रणवीर बीड़ी बनती है। जब पति अस्वस्थ (लकवा) हो जाता है जिससे चपरासी की नौकरी चली जाती है। घर की सारी जिम्मेदारी रणवीर पर आ जाती है। परिवार की जिम्मेदारी का निर्वहन करने के लिए देर रात तक बीड़ी बनाती और सुबह जल्दी उठकर फिर उसी काम में लग जाती है। पुत्री शीला भी काम कर घर की आर्थिक स्थिति सुधारने में सहयोग करती है। शाम को काम से आते समय मोहल्ले के लड़के परेशान करते हैं। "शीला सुबह काम पर जाती या शाम को वापस लौटती तो गली मुहल्ले के लड़कों से बचना मुश्किल हो जाता ..... शायद छाती में कुछ अतिरिक्त मांस चढ़ने लगा था। जब भी वह बहन के साथ चला है.... अजीब आँखों से लगातार घूरते पाया है लड़कों को ।.... इशारे.... फब्तियाँ जिन्हें अनदेखा या अनसुना करने की भरसक कोशिश करता....। नुकीले दांतों का दबाव मुलायम निचले होंठ पर बढ़ जाता.... किसी कोने से लहू छलछला आता ।"[2]

मूर्ति कहानी में कथाकार बनवासी में स्त्री की साहस व निर्णायक भूमिका को चित्रित किया है। श्रमिक नेता मानिक राम का हत्या हो जाने पर सरकार द्वारा उनके समाज सेवा के योगदान के कारण मूर्ति स्थापित कर वोट प्राप्त करने और उसके परिवार वालों को आर्थिक सहायता की प्रस्ताव पर मानिक राम की पत्नी जमुना जो पहले कभी लोगों के सामने बात भी नहीं करती थी, पति की मृत्यु के बाद उनके नाम पर स्वार्थ साधने की राजनीति को जानकर अपने स्वार्थ न देख पूरे समाज की मान सम्मान करते हुए सरकारी आर्थिक सहायता लेने से मना कर देती है। इसको देखते हुए मानिकराम का मित्र जनक लाल ठाकुर कहते हैं – "मैं बहुत आश्चर्य से भौजी को देख रहा था। ये वही भौजी है, जो गाँव से आई है, जिसे कुछ भी कहते–बोलते एकदम लाज आती थी, जिसे मैं जब–तब छेड़ता रहता था– 'कोंदी (गूंगी) भौजी !' भौजी के साँवले उदास चेहरे पर कोई गुस्सा नहीं है, कोई शिकन नहीं है, बल्कि एक फ़ैसला है, ठंडे दिमाग से सोचा हुआ, दीर्घकालीन लड़ाई लड़ने का। विचलनरहित। किसी लालच या भय का दूर–दूर तक नामोनिशान नहीं।"[3]

'लव–जिहाद' लाइव कहानी में पूरनलाल की पत्नी घर की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए कठिन प्रश्न करती है। शहर जाकर घूम–घूम कर सब्जी बेचती है। निम्नमध्यम वर्ग स्त्री घर–बार संभालने के बाद बाहर काम कर गृहस्थी चलाने के साथ–साथ कठिन परिश्रम करती है। कैलाश बनवासी भारतीय समाज में श्रमिक वर्ग की यथार्थ चित्रण कर स्त्रियों की स्थिति का वास्तविक चित्रण किया है। जया की छोटी बहन अपने माँ के बारे में कहती है – "हमेशा हँसने खिलखिलाने वाली माँ, सबको सहयोग करने वाली माँ। माँ शहर जाकर घूम–घूम के साग–भाजी बेचती है। है। गाँव की कुछ और महिलाएँ भी जाती हैं। उनका संग–साथ कितना जीवंत था। वे एकदम सुबह चार बजे उठ जातीं। बाड़ी की साग–भाजी होती या फिर गाँव के कोचिया से खरीदकर ले जाते। बड़े से झौंहा में साग–भाजी सर में बोहे... शहर की गलियों में फेरी लगाती, आवाज़ लगाती माँ– "ले करेला, कोहड़ा, तरोई, बरबट्टी, धनिया, पताल वोऽऽऽ!" बचपन से देख रही हूँ, इसमें कभी नागा नहीं हुआ, केवल त्योहार–बार को छोड़ के। हम दोनों बहन भी बहुत बार माँ के संग जातीं, अक्सर त्योहारों में, जब बोझा ज्यादा हो जाता। ऐसे माँ हम लोगों को कम ही लेकर जाती।"[4]

उसकी वापसी कहानी में समाज में स्त्री की यथार्थ को कथाकार चित्रित किया हैं। शादी के बाद लड़की पिता के घर को छोड़ पति के घर को ही अपना घर मानती है। सामाजिक रीति–रिवाज भी यही है लेकिन पति कोअपना सर्वस्व मानकर पिता के घर को छोड़ती है, और वही पति जब अपनी पत्नी को प्यार न दे तो पत्नी का जीवन कष्टमय बन जाती है। आशी का पिता अपनी माँ के कहने पर पत्नी को बहुत डाटता है। आशी की दादी भी अपनी बहू को पसंद नहीं करती क्योंकि वे गरीब घर से आई है। घर का सभी काम करने के बाद भी पति और सास से डाट खाती है। समाज में स्त्री जीवन का यथार्थ चित्रण कहानी में दृष्टिगोचर होता है। आशी अपने मां के बारे में सोचती हुई कहती है – "वो बेचारी तो उसका आगे–आगे से हर काम करने की कोशिश करती हैं... टाइम पर चाय, टाइम पर नाश्ता, खाना... फिर कभी–कभी रात को उनके पैर दबाना। तब भी ना दादी हमेशा पापा से मम्मी की शिकायत करती रहती हैं–"अरे, बता दे जा के अपनी बीवी को... मेरे से बगैर पूछे क्या बनेगा, इसका फैसला न किया करे! अरे, अभी मैं जिंदा हूँ। ये तो मेरी एक बात नहीं सुनती! बहुत चढ़–बढ़ गई ये। आखिर जैसे घर से आई है उसके गुन तो वही रहेंगे!" सुन के पापा एकदम गुस्सा हो जाते हैं, मम्मी को जोर–जोर से डाँटने लगते हैं बहुत गुस्से से... "तू आखिर करती क्या है दिन भर ? मेरे माँ–बाप का ध्यान नहीं रख सकती ?"[5]

स्पीड कहानी में मंहगी होती शिक्षा व्यवस्था की यथार्थ का चित्रण है। अज्जू की बड़ी बहन स्कूल में पढ़ाती है, वही अज्जू को इंजीनियरिंग पढ़ने के लिए भिलाई भेजती है, उनका पढ़ाई का पूरा खर्च उठाती है। लेकिन शादी के बाद उनके ससुराल वाले अज्जू की पढ़ाई के लिए पैसा देने से मना करते हैं, जिससे अब अज्जू का आगे की पढ़ाई छोड़ने की नौबत आ जाता है। उनके मित्र "रवि ही अज्जू की कहानी बताने लगा, "एक्चुअली, अज्जू की बड़ी सिस्टर ही उसको पढ़ा रही थी। घर में अकेली वोई जॉब करती है... पढ़ाती है स्कूल में... उसी ने भेजा था अज्जू को इधर... सारा खर्चा मैं उठाऊँगी बोल के।" "फिर?"

"छह महीने पहले उसकी शादी हो गई। तो उसकी ससुराल वाले अब मना कर रहे हैं इसको पैसे देने से...। वो चाहते हैं उसकी कमाई का पैसा उनको ही मिले। दो–तीन महीने से ये लफड़ा चल रहा है... इसकी सिस्टर चाहती है... पर... आज इसकी सिस्टर ने इसकी माँ को फ़ोन किया था रोते–रोते... मैं रुपया नहीं दे पाऊँगी... तो माँ ने अज्जू को फ़ोन किया... वापस आ जा...।"[6]

कथाकार स्त्री की शादी के बाद बदलाव का कड़वा सच को उजागर किया है। शादी के पूर्व लड़की अपने माता–पिता के साथ हर परिस्थिति में सहयोग करती है, लेकिन शादी के बाद उनका निर्णय लेने वाले उनके ससुराल पक्ष हो जाते हैं।

लोहा और आग... और वे... कहानी में राजस्थानी लोहार परिवार सहित जीवन निर्वाह के लिए पलायन कर अन्य राज्यों में चले जाते हैं। वहां स्त्री अपने पति, बच्चे के साथ अपना चूल्हा–चौका के कार्यों से निवृत्त होकर पति के कार्यों में हाथ बटाती है। जहां परिवार के लिए दो वक्त के लिए भोजन का प्रबंध हो वही पत्नी भी अपना जीवन निर्वाह करती है। कठिन संघर्ष करने के बाद भी अपने परिवार के लिए अपना स्वास्थ्यगत भूलकर आराम नहीं करती बल्कि कठिन परिश्रम करती है।

"वह काला लोहार चिमटी से पकड़कर भट्ठी से लाल गर्म आरी निकालता और ठोंक–पीटकर नोकीला बनाता। इस काम में उसका किशोर बेटा मदद करता था घन से पीटने में और उसकी हँ समुख पत्नी घर के काम–काज के बीच आवश्यकतानुसार धौंकनी पर आकर बैठ जातो और हवा करने का पैडल घुमाने लगती थी।"[7]

उसकी खुशी कहानी में कथाकार समाज में कम उम्र में स्त्री की शादी के बाद पारिवारिक जिम्मेदारी को संभालने में असक्षम, शारीरिक थकान के कारण स्वास्थ्य पर पड़ता पूरा प्रभाव को चित्रित किया है। लेखक की बड़ी बहन मीना की कम उम्र में शादी के कारण पारिवारिक जिम्मेदारी का निर्वहन नहीं कर सकने व पति द्वारा दूसरे स्त्री को रखने से मीना के मायके वाले मीना की अधिक उम्र के पुरुष से विवाह कर देते हैं। जिसके पहले से संतान है। कुछ समय बाद लेखक की दीदी मीना मनोरोग से ग्रस्त हो जाती है। इस तरह स्त्री जीवन की दास्तान को कथाकार कहानी के माध्यम से यथार्थ चित्रण किया है। डॉक्टर के पास इलाज करने के लिए जाने पर सभी बात लेखक डॉक्टर को बताते हुए कहते हैं– "जब पहली बार दीदी को जाने–माने मनोरोग विशेषज्ञ डॉ. पाठक के पास ले गये थे। हमने दीदी की कहानी उन्हें बतायी थी। बमुश्किल सोलह साल की उम्र में माँ–बाप ने शादी कर दी थी। ससुराल में निभ नहीं सकी। एकाध साल बाद वह लौट आयीं। पन्द्रह बरस करीब यों ही मायके में रहीं। उनके पति ने किसी दूसरी को रख लिया। छह–सात साल पहले एक विधुर के साथ उनकी दूसरी शादी हुई। जीजाजी की पहली पत्नी की तरफ से तीन बच्चे हैं। इनके एक भी नहीं। मानसिक रोग के लक्षण ढाई बरस पहले दिखने शुरू हुए, हँसना, बात नहीं मानना, अपनी जिद पर अड़े रहना, अव्यावहारिक होना। हम जितनी बातें जानते थे, सब क्रमवार बताते चले गये। डॉ. पाठक केस के महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं को पर्ची पर नोट करते गये।"[8]

संतरे कहानी में संतरा बेचकर परिवार चलाने वाली महिलाओं का चित्रण है। समाज में स्त्रियों पर निम्न मासिकता वाले लोगों की संकीर्ण मानसिकता को कथाकार चित्रण किया है। अपने परिवार चलाने के लिए रेलगाड़ी में संतरेवाली सुबह से लेकर शाम तक भीड़–भाड़ में टोकरी सर पर रखकर संतरा बचने के लिए भागदौड़ करती है। संतरेवाली पर मनचले युवकों द्वारा शरारत किया जाता है। काम करने घर से निकलने पर इस तरह की स्थिति रेल, बस में प्रायः देखा जाता है। यह स्थिति स्त्रियों की सुरक्षा पर प्रश्नचिन्ह लगाती है। समाज में सभी लोग अपने परिवार को सुरक्षा में रखना चाहते हैं, तो कामगार महिलाओं की यह स्थिति क्यों? ऐसी ही स्थिति का चित्रण कहानी में दृष्टिगोचर होता है। बख्शी जी कहते हैं– "और देखो! इनके बाहर आते ही ये पुरुष कैसे मक्खियों से भिनभिनाने लगे हैं पर! जैसे फुटपाथ पर कोई चीज बहुत सस्ती मिल रही हो।

तभी वह चौके, किसी औरत के गुस्से से चिल्लाने की आवाज आ रही थी। उन्होंने देखा, जहाँ लड़कों का झुंड बैठा था, वहाँ एक सांवली औरत बेहद गुस्से से उन पर बरस रही थी, चिल्ला रही थी– साले हो! हरामजादा हो रे! इहां मस्ती मारे ल आए हो रे, रोगहा हो! "[9]

कथाकार स्त्री की साहस का परिचय दिया है, जिससे मनचले लोगों का उनके अशो0ओ0भनीय कार्य का सबक मिल सके

गोमती एक नदी का नाम है कहानी स्त्रियों की मजबूरी का फायदा उठाने वाले लोग अपने स्वार्थ पूर्ति के लिए स्त्रियों की मजबूरी को जानकर उनके स्मिता से खिलवाड़ करना चाहते हैं। कथाकार भारतीय समाज की कड़वी सच्चाई को अपने कहानियों में स्थान दिया है। गोमती पति को जेल हो जाने पर अपने परिवार के परवरिश के लिए घर से काम करने निकलती है, वहां बाड़ी का सेठ गोमती की मजबूरी को जानकर फायदा उठाने की नियत से अपना स्वार्थ साधते हुए कहते हैं– "मैं उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा करने लगा। इन दिनों मुझे लगता था जैसे मैं एक शिकारी हूं, अपने मचान पर चढ़ा हुआ, निशाना साधे हुए मैं शिकार के आने के ताक में हूँ। और इस प्रतीक्षा में जो रोमांच है, वह इतनी शिद्दत के साथ मैं पहली बार महसूस कर रहा था।

जब गोमती के पारिवारिक पृष्ठभूमि के बारे में मुझे पता चला, लगा, मामला खुद–ब–खुद मेरी झोली में आ गिरा है। मेरी सफलता निश्चित है! मैं सुखद आश्चर्य से भर उठा था। पता चला कि उसका पति आजकल जेल में है। उस पर चोरी का इलजाम है। घर का खर्च उसी की कमाई से चलता था। परिवार में उसके पति की बूढ़ी होती माँ है, दस–बारह साल का देवर है और उसके तीन छोटे–छोटे बच्चे हैं।

पति की अनुपस्थिति में घर संभालने की जिम्मेदारी उस पर आ गयी पी है। है।"[10]

उसके दरबार में कहानी में डाली की शादी के बाद ससुराल वाले दकियानूसी विचारधारा मानने वाले हैं। डाली को घर से निकलने पर बंदी था। पति भी अपने पत्नी की बात कम सुनते हर बात को माँ पर छोड़ देते। इस तरह कथाकार ने महिलाओं के जीवन में शादी के बाद प्रतिबंध को सामाजिक उत्थान के लिए प्रतिकूल मानते हुए रूढ़िवादी मानसिकता को कहानी के माध्यम से उजागर किया है। "मम्मी–पापा ने या इवेन मैंने कभी नहीं सोचा था कि उसके ससुरालवाले इतने संकीर्ण बुद्धि के होंगे ! पुरानी मानसिकता के लोग ! इतने ओल्ड माइंडेड जिन्हें अपनी बहू का घर से बाहर कदम रखना भी गवारा नहीं। और उसकी जरूरत की सारी चीजें घर में लाकर देने का दंभ अलग 'क्या तकलीफ है आपकी बेटी को? घर में रानी जैसे रखते हैं'!, मैंने उसकी सास को एक बार कहते सुना था। डॉली से फोन में थोड़ी देर हाल–चाल ले लो तो उसकी सास की भाँहे टेढ़ी हो जाती हैं। और लड़का यानी दामाद राजू भी छब्बीस की उमर के बावजूद हर बात में 'मम्मी जानेगी' या 'मम्मी से पूछ लो' वाली मेन्टिलिटि का है।"[11]

स्त्रियों को सामाजिक रीति–रिवाज तो कभी रूढ़िवादी मासिकता के कारण स्वतंत्र भारत में भी पुरुष प्रधान भारतीय समाज में जो अधिकार मिलना चाहिए वह केवल औपचारिक मात्र ही रह गई है। यथार्थ कुछ और ही है। इसी वास्तविकता को कैलाश बनवासी अपने कहानियों में चित्रित कर स्त्रियों के अधिकारों, उनके साथ हो रहे अन्यायों के खिलाफ पाठक वर्ग व समाज के प्रबुद्धजनों को विचार करने के लिए मजबूर करते हैं।

निष्कर्ष

इस प्रकार कहा जा सकता है कि कैलाश बनवासी अपने कहानियों में स्त्री जीवन की वास्तविक स्थिति का चित्रण करते हैं। कहानियों के माध्यम से स्त्रियों की संघर्षशील जीवन का यथार्थ को पात्रों के माध्यम से यथार्थ धरातल पर दिखाने का प्रयास किये है। स्त्री, पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलकर आर्थिक स्थिति में सहयोग देती है। विषम परिस्थितियों में भी साहस भरती है। अन्यया के विरोध के लिए आवाज उठाती है, इसके बावजूद भी भारतीय पुरुष प्रधान समाज में स्त्रियों की स्थिति पुरुषों की अपेक्षा कम आंका जाता है। खासकर निम्नमध्यम वर्ग परिवार की स्त्री आर्थिक, सामाजिक दृष्टि से अपने अधिकारों से वंचित है। समाज में उनके साथ सम्मान पूर्वक व्यवहार नहीं किया जाता। कार्य स्थल में भी उनकों संघर्ष करना पड़ता है। इस तरह भारतीय समाज में स्त्रियों की जीवन संघर्षपूर्ण बनी हुई है। उनके अधिकारों व अस्मिता की रक्षा के लिए कथाकार सजक प्रहरी के रूप में साहित्य जगत में स्त्रियों को अधिकार दिलाने के लिए आवाज उठाते हुए जन चेतना जागृत करते हैं।

संदर्भ सूची

1. बनवासी, कैलाश. लक्ष्य तथा अन्य कहानियाँ (पहिये), दुर्ग: श्री प्रकाशन, 1993, पृष्ठ 34.
2. बनवासी, कैलाश. लक्ष्य तथा अन्य कहानियाँ (दोहराव), दुर्ग: श्री प्रकाशन, 1993, पृष्ठ 49.
3. बनवासी, कैलाश. जादू टूटता है (मूर्ति), दिल्ली: राजपाल एण्ड सन्ज़, 2019, पृष्ठ 52.
4. बनवासी, कैलाश. जादू टूटता है ('लव–जिहाद' लाइव), दिल्ली: राजपाल एण्ड सन्ज़, 2019, पृष्ठ 82–83.
5. बनवासी, कैलाश. जादू टूटता है (उसकी वापसी), दिल्ली: राजपाल एण्ड सन्ज़, 2019, पृष्ठ 107–108.
6. बनवासी, कैलाश. पीले काग़ज़ की उजली इबारत(स्पीड), ग़ाज़ियाबाद: अंतिका प्रकाशन, 2008, पृष्ठ 102.
7. बनवासी, कैलाश. बाजार में रामधन(लोहा और आग... और वे. ..), नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 2004, पृष्ठ 40.
8. बनवासी, कैलाश. बाजार में रामधन (उसकी खुशी), नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 2004, पृष्ठ 145.
9. बनवासी, कैलाश. प्रकोप तथा अन्य कहानियाँ (संतरे), इलाहाबाद: साहित्य भंडार प्रकाशन, 2015, पृष्ठ 61.
10. बनवासी, कैलाश. प्रकोप तथा अन्य कहानियाँ (गोमती एक नदी का नाम है), इलाहाबाद: साहित्य भंडार प्रकाशन, 2015, पृष्ठ 67.
11. बनवासी, कैलाश. प्रकोप तथा अन्य कहानियाँ (उसके दरबार में), इलाहाबाद: साहित्य भंडार प्रकाशन, 2015, पृष्ठ 105.